अपनी माटी

अपनी माटी

साहित्य और समाज का दस्तावेज़ीकरण
Peer Reviewed Refereed Journal | त्रैमासिक | शुरुआत - 2013 | चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
www.apnimaati.com apnimaati.com@gmail.com

शोध आलेख : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं अनुवाद / ध्रुव कुमार

Gunwant सोमवार, सितंबर 30, 2024

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं अनुवाद

- ध्रुव कुमार

शोध सार : हमारा देश एक ज्ञान आधारित समाज एवं अर्थव्यवस्था बनने की ओर प्रयासरत है। इस सामाजिक और राष्ट्रीय प्रयास में अनुवाद की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। अनुवाद तमाम भाषाई और सांस्कृतिक खाइयों को पाटकर सूचना के निर्बाध आदान-प्रदान को संभव बनाता है। पिछले कुछ समय में दुनिया बहुत तेजी से आपस में जुड़ी है। वैश्वीकरण ने इस जुड़ाव को यथार्थ स्वरूप प्रदान किया है। ऐसी दुनिया में तरह-तरह के शोधों, सूचनाओं, दस्तावेजों आदि का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद व्यापक स्तर पर लोगों की सूचना तक पहुँच सुनिश्चित करता है। यह पहुँच नागरिकों द्वारा किसी समाज की सामूहिक, बौद्धिक एवं आर्थिक वृद्धि में योगदान सुनिश्चित करती है। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में अनुवाद को विशिष्ट महत्त्व दिया गया है। प्रस्तुत आलेख ज्ञान आधारित समाज के रूप में अग्रसरित भारत में अनुवाद की भूमिका को परिलक्षित करने का प्रयास करता है।

बीज शब्द : अनुवाद, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, ज्ञान आधारित समाज, अर्थव्यवस्था, सूचना, साहित्य, वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन, वैज्ञानिक प्रगति।

मूल आलेख : अनुवाद अपने आप में एक व्यापक अवधारणा है जो महज़ भाषाई रूपांतर तक ही सीमित न होकर विभिन्न समाजों एवं समूहों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान का मार्ग प्रशस्त करता है। साहित्य आदि के अनुवाद की दृष्टि से अनुवाद का इतिहास कुछ हजार साल पहले तक से प्रारंभ माना जा सकता है पर गहराई से इसकी जाँच की जाए तो इसकी जड़ें हमें मानव समाज की आदिम अवस्था से ही मिलनी प्रारंभ हो जाएँगी। शोधकर्ता मानते हैं कि "अनुवाद का इतिहास मानव भाषा के जितना ही पुराना है।"1 अपनी इस सुदीर्घ यात्रा में अनुवाद ने विश्व भर में मानव समाजों के बीच ज्ञान और सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम समृद्ध किया और नयी दिशा दी।

आज दुनिया सतत नए-नए बदलावों से गुजर रही है। लगातार हो रहे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी विकास ने लोगों के जीवन, रहन-स उनके सोचने के तरीके को प्रभावित किया है। इन वैश्विक प्रभावों ने दुनिया को ज्ञान आधारित समाज बनने की ओर उन्मुख किया है। ज्ञान आधारित समाज र एक ऐसे समाज से है जहाँ मानव समाज अपनी ज्ञान पूँजी के आधार पर अपनी आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी स्थिति को सुदृढ़ कर सके। किसी राष्ट्र द पूँजी का निर्माण करने और उसका उपयोग कर मानव को सशक्त और सक्षम बनाने की क्षमता ही राष्ट्र की वास्तविक क्षमता होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति विद्यार्थियों की बाल्यावस्था से ही अनुवाद के माध्यम से देश-दुनिया के विविध समाजों के विविध साहित्यों के परिचय की संकल्पना करती है। "सभी भारत स्थानीय भाषाओं में दिलचस्प और प्रेरणादायक बाल साहित्य और सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए स्कूल और स्थानीय पुस्तकालय में बड़ी मात्रा में पुस्तक कराई जाएगी। इसके लिए आवश्यकता अनुसार उच्चतर गुणवत्ता के अनुवाद आवश्यकता अनुसार तकनीकी मदद से भी करवाए जाएंगे।"2

मानव एवं समाज के विकास के लिए शिक्षा का महत्त्व निर्विवाद है। अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने मानव के सर्वांगीण विकास एवं जीवन के प्राप्त करने के लिए शिक्षा को सर्वोत्तम साधन माना है। नयी शिक्षा नीति मानव क्षमता के पूर्ण दोहन एवं उसके समुचित विकास के लिए शिक्षा को सर्वाधिक म माध्यम मानती है। इसके अनुसार, "शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ाव